ISSN: ISSN: 2583-5149 | Vol-4, Issue-1 | July 2026

भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों का वैश्विक योगदान

अर्पित कुमार

शोधच्छात्र संस्कृत तथा प्राकृत भाषा विभाग ,

लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ

शोधसारः वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जलवायु परिवर्तन, पारिस्थितिक असंतुलन और संसाधनों का अनियंत्रित दोहन मानवता के अस्तित्व के लिए गंभीर चुनौती बन गए हैं। यद्यपि संयुक्त राष्ट्र के 'सतत विकास लक्ष्य' इन समस्याओं के समाधान हेतु एक ढांचा प्रदान करते हैं, किंतु उनकी सफलता के लिए एक सुदृढ़ नैतिक और दार्शनिक आधार की आवश्यकता है। प्रस्तुत शोध पत्र 'भारतीय ज्ञान परंपरा' के दार्शनिक स्तंभों और सतत विकास के बीच के अंतर्संबंधों का अन्वेषण करता है। यह शोध ईशावास्योपनिषद के **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा'**, अथर्ववेद के **'पृथ्वी सूक्त'** और **भगवदगीता** के **'अपरिग्रह'** जैसे सिद्धांतों के माध्यम से यह सिद्ध करता है कि भारतीय चिंतन में विकास की अवधारणा 'प्रकृति के विरुद्ध' नहीं, बल्कि 'प्रकृति के साथ' सह-अस्तित्व पर आधारित है। शोध पत्र में प्राचीन जल प्रबंधन, प्राकृतिक कृषि और **'वसुधैव कुटुंबकम्'** की वैश्विक प्रासंगिकता का विश्लेषण किया गया है।

अंततः, यह शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्य आधुनिक विज्ञान के पूरक बनकर एक संतुलित, न्यायपूर्ण और स्थायी वैश्विक भविष्य की नींव रख सकते हैं।

कीवर्ड्स - भारतीय ज्ञान परंपरा, सतत विकास, श्रीमद्भगवदगीता, ईशावास्योपनिषद, पारिस्थितिक नैतिकता, अपरिग्रह, वसुधैव कुटुंबकम्, पंचमहाभूत, जलवायु परिवर्तन।

प्रस्तावना

"ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥" (ईशावास्योपनिषद)

यह शांति मंत्र भारतीय दर्शन की उस शाश्वत दृष्टि को रेखांकित करता है जहाँ प्रकृति को एक 'पूर्ण' इकाई माना गया है। आधुनिक युग में जिसे हम 'सतत विकास' कहते हैं, उसका बीज भारतीय ज्ञान परंपरा के इसी दार्शनिक चिंतन में निहित है। वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास और संसाधनों का अनियंत्रित दोहन मानवता के अस्तित्व के सम्मुख गंभीर प्रश्न खड़े कर रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र के 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति के लिए आज विश्व समुदाय एक ऐसे प्रतिमान की खोज कर रहा है जो विकास और पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित कर सके। भारतीय ज्ञान परंपरा का दार्शनिक आधार 'मनुष्य' को 'प्रकृति' का स्वामी नहीं, बल्कि उसका एक अभिन्न अंग मानता है। ईशावास्योपनिषद का प्रथम मंत्र ही जीवन शैली का वैश्विक सूत्र प्रदान करता है:-

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥"

अर्थात इस जगत में जो कुछ भी है, वह ईश्वर द्वारा व्याप्त है। इसलिए संसाधनों का उपभोग 'त्याग' के भाव के साथ करना चाहिए और किसी दूसरे के धन (या प्रकृति के हिस्से) का लालच नहीं करना चाहिए। यह 'अपरिग्रह' और 'न्यूनतम उपभोग' का विचार आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति का सबसे सटीक दार्शनिक विकल्प है। भारतीय दर्शन की एक और महत्वपूर्ण विशेषता **'वसुधैव कुटुंबकम्'** (महोपनिषद) की भावना है, जो संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानती है। यह दृष्टि विकास को केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रखती, बल्कि 'सबके कल्याण' की बात करती है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में कहा गया है— **"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"** (भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ)। यह भावनात्मक संबंध ही वह आधार है जिससे पारिस्थितिक चेतना का जन्म होता है।

इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के इन दार्शनिक मूल्यों का विश्लेषण करना और यह स्पष्ट करना है कि कैसे ये प्राचीन सिद्धांत आधुनिक वैश्विक विकास की नीतियों को एक नैतिक और स्थायी दिशा प्रदान कर सकते हैं। यह शोध इस परिकल्पना पर आधारित है कि सतत विकास की कुंजी केवल तकनीकी समाधानों में नहीं, बल्कि उन दार्शनिक मूल्यों में है जो प्रकृति के प्रति 'कृतज्ञता' और 'संयम' सिखाते हैं।

1. **सतत विकास के दार्शनिक स्तंभ**

   भारतीय दर्शन में सतत विकास का अर्थ केवल भावी पीढ़ी के लिए संसाधनों का संचय मात्र नहीं है, बल्कि समस्त चराचर जगत के साथ सामंजस्य बिठाना है। इसके प्रमुख दार्शनिक स्तंभ निम्नलिखित हैं:-

- **पंचमहाभूत सिद्धांत**- भारतीय चिंतन के अनुसार, संपूर्ण सृष्टि और मानव शरीर पाँच मूलभूत तत्वों से निर्मित हैं— पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। तैत्तिरीय उपनिषद में सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम बताते हुए कहा गया है:-**"तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः संभूतः। आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथ्वी॥"** यह श्लोक दर्शाता है कि प्रत्येक तत्व दूसरे से जुड़ा है। यदि वायु प्रदूषित होती है, तो उसका प्रभाव अग्नि, जल और अंततः पृथ्वी पर पड़ेगा। भारतीय ज्ञान परंपरा का यह स्तंभ सिखाता है कि इन पाँच तत्वों की शुद्धता बनाए रखना ही वास्तविक विकास है। आधुनिक विज्ञान जहाँ **'रिसोर्स मैनेजमेंट'** की बात करता है, वहीं भारतीय दर्शन इन तत्वों को **'देवत्व'** प्रदान कर उनके प्रति पूज्य भाव जागृत करता है, जिससे मनुष्य उनका दोहन करने के बजाय संरक्षण करना अपना धर्म समझने लगता है।
- **अपरिग्रह और संयमित उपभोग -** सतत विकास का दूसरा सबसे बड़ा शत्रु 'असीमित लालच' है। भारतीय दर्शन 'अपरिग्रह' पर बल देता है। **श्रीमद्भगवदगीता** में भगवान कृष्ण कहते हैं:-

  "यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥"(3.13)

  अर्थात् जो केवल अपने लिए पकाते हैं (या केवल अपने स्वार्थ के लिए संसाधनों का उपयोग करते हैं), वे पाप का भक्षण करते हैं।

यह दर्शन 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' का आध्यात्मिक आधार है, जहाँ उपभोग का उद्देश्य केवल जीवित रहना और लोक-कल्याण है, न कि विलासिता। यह विचार आधुनिक समाज को 'यूज़ एंड थ्रो' की संस्कृति से बाहर निकालकर **'सादा जीवन, उच्च विचार'** की ओर प्रेरित करता है।

- **ऋत और धर्म:-** वैदिक दर्शन में 'ऋत' का अर्थ है— वह प्राकृतिक नियम जो संपूर्ण ब्रह्मांड को संचालित करता है। सूर्य का समय पर उगना, ऋतुओं का चक्र—यह सब ऋत के अधीन है। जब मनुष्य अपने विकास की अंधी दौड़ में इस 'ऋत' या प्राकृतिक व्यवस्था में हस्तक्षेप करता है, तो पारिस्थितिक असंतुलन पैदा होता है। अथर्ववेद में 'पृथ्वी सूक्त' के अंतर्गत प्रार्थना की गई है:-
  "यत्ते भूमे विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु। मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्॥"
  अर्थात् "हे पृथ्वी माता! मैं तुझे जितना खोदूँ, तू उतनी ही शीघ्रता से पुनः भर जाए। मैं तेरे मर्मस्थल या हृदय को कभी क्षति न पहुँचाऊँ।" यह प्रार्थना सतत विकास की सर्वश्रेष्ठ परिभाषा है—**प्रकृति से उतना ही लेना जितना वह पुनः उत्पन्न कर सके।**
- **सह-अस्तित्व और सर्वोदय:-** भारतीय ज्ञान प्रणाली का दर्शन 'सर्वाइवल ऑफ द फिटेस्ट' (जो शक्तिशाली है वही बचेगा) में विश्वास नहीं करता, बल्कि यह 'सह-अस्तित्व' की बात करता है। भारतीय मनीषा मानती है कि वृक्षों, पशुओं और सूक्ष्म जीवों के बिना मानव का विकास असंभव है। यह 'पर्यावरण-केंद्रित' दृष्टिकोण है, न कि 'मानव केंदित'। जब हम 'सर्वजन सुखाय' की बात करते हैं, तो उसमें केवल मनुष्य ही नहीं, बल्कि संपूर्ण जैव-विविधता सम्मिलित होती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के ये दार्शनिक स्तंभ यह स्पष्ट करते हैं कि सतत विकास की नींव भौतिक संपदा पर नहीं, बल्कि 'धर्म' और 'नैतिकता' पर टिकी है। जहाँ आधुनिक दृष्टिकोण बाहरी दुनिया को सुधारने की कोशिश करता है, वहीं भारतीय दर्शन मनुष्य के आंतरिक दृष्टिकोण को बदलने का आह्वान करता है, क्योंकि एक संयमित मन ही एक सुंदर पृथ्वी का निर्माण कर सकता है।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्य और सतत विकास लक्ष्य

संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2015 में निर्धारित 'सतत विकास लक्ष्य' (Sustainable Development Goals - SDGs) वैश्विक शांति और समृद्धि का एक खाका पेश करते हैं।

यद्यपि ये लक्ष्य आधुनिक वैश्विक चुनौतियों की प्रतिक्रिया स्वरूप उपजे हैं, किंतु भारतीय ज्ञान परंपरा के दार्शनिक मूल्यों में इनके बीज सदियों पहले बो दिए गए थे।

- **SDG 12 (जिम्मेदारी से उपभोग और उत्पादन) एवं 'अपरिग्रह'-** आधुनिक विश्व की सबसे बड़ी चुनौती संसाधनों का अत्यधिक दोहन है। संयुक्त राष्ट्र का लक्ष्य 12 'सतत उपभोग' पर बल देता है। भारतीय दर्शन का 'अपरिग्रह' और 'मितव्ययिता' का सिद्धांत इसका सशक्त समाधान है। **श्रीमद्भगवदगीता** में कहा गया है:- "**आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्। तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी॥"** (2.70) अर्थात्, जैसे विभिन्न नदियाँ समुद्र में समाहित हो जाती हैं पर समुद्र विचलित नहीं होता, वैसे ही जिस व्यक्ति की इच्छाएँ उसमें विलीन हो जाती हैं, वही शांति पाता है। यह 'इच्छाओं के संयम' का वैश्विक दर्शन ही अनियंत्रित उत्पादन और उपभोग को रोककर धरती को बचा सकता है।
- **SDG 13 (जलवायु परिवर्तन) एवं 'माता भूमिः'-** जलवायु परिवर्तन आज एक वैश्विक आपातकाल है। भारतीय दर्शन में प्रकृति को 'जड़' नहीं बल्कि 'चेतन' और 'सजीव' माना गया है। अथर्ववेद का पृथ्वी सूक्त (12.1.12) मैं कहां गया है :- "**माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः"** (भूमि मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ।) जब मनुष्य प्रकृति को 'संसाधन' के बजाय 'माता' मानता है, तो उसका शोषण करना नैतिक रूप से असंभव हो जाता है। यह 'पारिस्थितिक चेतना' ही जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध सबसे प्रभावी वैश्विक हथियार है, जिसे भारत ने 'Mission LiFE' (Lifestyle for Environment) के माध्यम से विश्व के सामने रखा है।
- **SDG 14 और 15 (जल एवं थल पर जीवन) एवं 'अहिंसा' और 'दया'-** भारतीय दर्शन में जीव मात्र के प्रति करुणा का भाव निहित है। यजुर्वेद (36.17) की शांति पाठ की ऋचा समस्त वनस्पतियों और औषधियों की शांति की कामना करती है:- **"पृथ्वी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः..."** यह प्रार्थना केवल मनुष्यों के लिए नहीं, बल्कि संपूर्ण प्रकृति के लिए है। यह SDG 14 (जल के नीचे जीवन) और SDG 15 (भूमि पर जीवन) के संरक्षण हेतु एक आध्यात्मिक प्रतिबद्धता प्रदान करती है।

- **SDG 16 (शांति और न्याय) एवं 'वसुधैव कुटुंबकम्'-** आज का विश्व भू-राजनीतिक संघर्षों से जूझ रहा है। महोपनिषद का श्लोक- **"अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥"** (यह मेरा है, वह पराया है—ऐसी सोच छोटे मन वालों की होती है। उदार चरित्र वालों के लिए तो संपूर्ण पृथ्वी ही एक परिवार है।) यह सूत्र वैश्विक नागरिकता का आधार है। यह केवल शांति ही नहीं, बल्कि न्यायपूर्ण वितरण और साझा विकास की नींव रखता है, जो सतत विकास के लिए आवश्यक है।
- **वैश्विक योगदान: G20 और 'One Earth, One Family, One Future'-** हाल के वर्षों में भारत ने अपने नेतृत्व के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के इन मूल्यों को वैश्विक नीतियों का हिस्सा बनाया है। G20 शिखर सम्मेलन का मूल मंत्र **'वसुधैव कुटुंबकम्'** ही था। यह इस बात का प्रमाण है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल्य केवल प्राचीन ग्रंथ तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे 'Global South' की आवाज बनकर एक न्यायपूर्ण और सतत विश्व के निर्माण में मार्गदर्शक की भूमिका निभा रहे हैं।

3. **व्यावहारिक अनुप्रयोग**

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता यह है कि इसमें सूक्ष्म दर्शन और स्थूल व्यवहार के बीच कोई अंतर नहीं है। सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु निम्नलिखित व्यावहारिक अनुप्रयोग अत्यंत आवश्यक हैं:-

- **कृषि:-** आधुनिक रासायनिक खेती के दुष्परिणामों के बीच 'जैविक कृषि' एक संजीवनी के रूप में उभरी है। वैदिक परंपरा में भूमि को केवल 'फैक्ट्री' नहीं, बल्कि 'अन्नपूर्णा' माना गया है। ऋग्वेद में कृषि कर्म की महत्ता बताते हुए कहा गया है:-**"अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित्कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।"** (ऋग्वेद 10.71.13) (अर्थात्: जुआ मत खेलो, कृषि करो और उससे प्राप्त धन का सम्मान करते हुए आनंद प्राप्त करो।) भारतीय ज्ञान परंपरा के अंतर्गत 'वृक्षायुर्वेद' जैसे ग्रंथों में बीजों के उपचार, जैविक खाद (जैसे पंचगव्य) और फसल चक्र का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह पद्धति मिट्टी की उर्वरता को नष्ट किए बिना "विषाक्त मुक्त भोजन" सुनिश्चित करती है, जो सीधे तौर पर SDG 2 (Zero Hunger) और स्वास्थ्य से जुड़ी है।

- **जल संरक्षण**:- भारत की प्राचीन सभ्यताएँ जल के प्रति अत्यंत संवेदनशील थीं। ऋग्वेद में जल को 'दिव्य' और 'रोगों का नाशक' माना गया है:- **"आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥"** (ऋग्वेद 10.9.1) (अर्थात्: हे जल! आप सुख के प्रदाता हैं, हमें ऊर्जा और शक्ति प्रदान करें।) व्यावहारिक रूप में, भारत की बावड़ियाँ , कुंड, और तालाब जैसी प्रणालियाँ जल संचयन के अद्भुत उदाहरण हैं। राजस्थान की बावड़ियाँ या दक्षिण भारत के मंदिर-तालाब न केवल जल संग्रहण करते थे, बल्कि भू-जल स्तर को बनाए रखने का वैज्ञानिक तरीका भी थे। यह 'विकेंद्रीकृत जल प्रबंधन' आज के जल संकट का एकमात्र स्थायी समाधान है।
- **जीवनशैली**:- सतत विकास का केंद्र 'मानव जीवन शैली' है। आयुर्वेद केवल चिकित्सा पद्धति नहीं, बल्कि ' जीवन जीने की कला' है। यह हमें 'ऋतुचर्या' और 'दिनचर्या' के माध्यम से प्रकृति के साथ तालमेल बिठाना सिखाता है। **"मितभुक्तं च हितभुक्तं च ऋतुभुक्तं च।"** (अर्थात्: कम खाएं, हितकारी खाएं और ऋतु के अनुसार खाएं।) यह सिद्धांत 'न्यूनतमवादी' जीवन शैली को बढ़ावा देता है। योग हमें शारीरिक और मानसिक रूप से संतुष्ट बनाता है, जिससे बाहरी संसाधनों पर हमारी निर्भरता कम होती है। जब मन 'संतोष' को प्राप्त कर लेता है, तो प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध उपभोग स्वतः रुक जाता है। यह जीवन शैली SDG 3 (Good Health and Well-being) का आधार है।

4. **वैश्विक योगदान और प्रासंगिकता**

आज जब संपूर्ण विश्व 'जलवायु परिवर्तन' और 'पारिस्थितिक असंतुलन' के दौर से गुजर रहा है, तब भारतीय दर्शन के 'पारिस्थितिक-केंद्रित' विचार एक वैश्विक समाधान के रूप में उभर रहे हैं। पश्चिमी देशों का विकास मॉडल जहाँ 'प्रकृति पर विजय' पाने की महत्वाकांक्षा पर आधारित रहा है, वहीं भारतीय ज्ञान परंपरा 'प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व' का मार्ग प्रशस्त करता है।

- **वैश्विक पर्यावरण नीति में योगदान: 'मिशन लाइफ'-** भारत ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर 'Mission LiFE' (Lifestyle for Environment) के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों को वैश्विक नीति का हिस्सा बनाया है। यह मिशन इस उपनिषदीय सत्य पर आधारित है कि व्यक्तिगत व्यवहार में परिवर्तन ही वैश्विक परिवर्तन का आधार है। **"यद् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे"** (अर्थात्: जो

शरीर में है, वही ब्रह्मांड में है।) यह दर्शन विश्व को सिखाता है कि यदि हम अपनी जीवनशैली को संयमित करते हैं, तो उसका सकारात्मक प्रभाव वैश्विक पर्यावरण पर पड़ता है। यह विचार आज के 'सस्टेनेबल कंजम्पशन' के वैश्विक विमर्श का केंद्र बन गया है।

- **वैश्विक अर्थव्यवस्था और 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' -** भारतीय ज्ञान परंपरा का आर्थिक दर्शन 'संग्रह' के बजाय 'वितरण' और 'पुनर्चक्रण' पर आधारित है। भारतीय परंपरा में किसी भी वस्तु का अपव्यय (Wastage) वर्जित माना गया है। महाभारत के शांति पर्व में कहा गया है:- **"यथा मधु समादत्ते रक्षन् पुष्पाणि षट्पदः। तद्वदर्थान् मनुष्येभ्य आदद्यादविहिंसया॥"** (अर्थात्: जैसे भँवरा फूलों को नुकसान पहुँचाए बिना उनसे रस ग्रहण करता है, वैसे ही मनुष्य को प्रकृति को क्षति पहुँचाए बिना उससे संसाधन लेने चाहिए।) यह 'भ्रमर-नीति' आज की चक्रीय अर्थव्यवस्था का प्राचीन संस्करण है, जो संसाधनों के निरंतर उपयोग और शून्य कचरा (Zero Waste) का समर्थन करता है।
- **वैश्विक शांति और 'वसुधैव कुटुंबकम्' का नेतृत्व-** सतत विकास तब तक संभव नहीं है जब तक विश्व में शांति न हो। संयुक्त राष्ट्र के SDG 16 (शांति, न्याय और मजबूत संस्थाएं) का सबसे प्रभावी आधार भारतीय दर्शन का 'वसुधैव कुटुंबकम्' है। G20 प्रेसीडेंसी: भारत ने G20 का मुख्य विषय 'One Earth, One Family, One Future' रखा, जो महोपनिषद का मूल मंत्र है। इसने विश्व को यह संदेश दिया कि सतत विकास केवल एक आर्थिक लक्ष्य नहीं, बल्कि एक वैश्विक परिवार की साझा जिम्मेदारी है।
- **जलवायु परिवर्तन और नैतिक उत्तरदायित्व-** भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक स्तर पर 'जलवायु परिर्वतन' का समर्थन करता है। यह तर्क देता है कि प्रकृति पर सबका समान अधिकार है और विकसित देशों का यह नैतिक उत्तरदायित्व है कि वे अपनी जीवनशैली को सुधारें। यजुर्वेद के इस मंत्र की प्रासंगिकता आज वैश्विक स्तर पर बढ़ गई है:- **"मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥"** (अर्थात्: हवाएं हमारे लिए मधुर वा कल्याणकारी हों, नदियों में मधुर जल प्रवाहित हो और औषधियां हमारे लिए गुणकारी हों।) यह 'वैश्विक कल्याण' की भावना ही आज के अंतरराष्ट्रीय समझौतों (जैसे पेरिस समझौता) को एक नैतिक आधार प्रदान करती है।

वैश्विक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता इस बात में निहित है कि यह विकास को केवल 'GDP' के चश्मे से नहीं, बल्कि 'GNH' (Global Natural Harmony) के चश्मे से देखता है। भारत का योगदान केवल योग और आयुर्वेद तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी "पारिस्थितिक नैतिकता" प्रदान कर रहा है, जिसके बिना 21वीं सदी का विकास अधूरा है।

5. चुनौतियाँ और समाधान

भारतीय ज्ञान परंपरा के दार्शनिक मूल्यों को आधुनिक सतत विकास के मॉडल में एकीकृत करना जितना आवश्यक है, उतना ही चुनौतीपूर्ण भी। इसके मार्ग में आने वाली प्रमुख चुनौतियाँ और उनके संभावित समाधान निम्नलिखित हैं:-

- **औपनिवेशिक मानसिकता और विश्वसनीयता का संकट:-** लंबे समय तक औपनिवेशिक शासन के कारण भारतीय ज्ञान को केवल 'अंधविश्वास' या 'पौराणिक कथा' मानकर उपेक्षित किया गया। आधुनिक शैक्षणिक जगत अक्सर प्राचीन सूत्रों को वैज्ञानिक प्रमाण के अभाव में स्वीकार नहीं करता। भारतीय ज्ञान परंपरा के सिद्धांतों का 'प्रमाण-आधारित' शोध होना चाहिए। प्राचीन श्लोकों को आधुनिक विज्ञान की भाषा में डिकोड करने की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए, पंचमहाभूतों की शुद्धि को 'एनवायर्नमेंटल इंजीनियरिंग' के मानकों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जाना चाहिए।
- **व्यावहारिक अनुप्रयोग का अभाव:-** हम ग्रंथों में **'अपरिग्रह'** और **'माता भूमिः'** की चर्चा तो करते हैं, लेकिन वास्तविक जीवन और नीतियों में हम अब भी पश्चिमी 'उपभोक्तावादी मॉडल' का ही अनुसरण कर रहे हैं। **भगवदगीता** का कर्मयोग यहाँ पथप्रदर्शक है:- **"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥" (3.21)** अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, सामान्य जन वैसा ही अनुसरण करते हैं। नीति निर्माताओं और समाज के शीर्ष नेतृत्व को भारतीय ज्ञान प्रणाली आधारित जीवन शैली अपनाकर एक 'रोल मॉडल' पेश करना होगा।
- **आधुनिक शिक्षा प्रणाली से अलगाव:-** हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली प्राचीन भारतीय दर्शन और आधुनिक विज्ञान को दो अलग-अलग ध्रुवों के रूप में देखती है। विद्यार्थियों को सतत विकास तो पढ़ाया जाता है, लेकिन उसका दार्शनिक आधार नहीं। नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के तहत

भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना एक सराहनीय कदम है। विज्ञान और दर्शन का 'अंतःविषय अध्ययन' अनिवार्य किया जाना चाहिए, ताकि भविष्य के इंजीनियर और वैज्ञानिक पर्यावरणीय नैतिकता को समझ सकें।

- **तकनीकी और आर्थिक प्रतिस्पर्धा:-** वैश्विक बाजार की प्रतिस्पर्धा में 'त्वरित लाभ' की चाहत 'सतत विकास' पर हावी हो जाती है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अक्सर आर्थिक विकास की गति को धीमा करने वाला माना जाता है। हमें 'अर्थ' और 'धर्म' के बीच संतुलन का भारतीय मॉडल पुनर्जीवित करना होगा। 'चक्रीय अर्थव्यवस्था' के लिए छोटे उद्योगों और स्वदेशी तकनीकों को बढ़ावा देना चाहिए, जो कम संसाधनों में अधिक परिणाम दे सकें।
- **भाषाई बाधा:-** भारतीय ज्ञान परंपरा का अधिकांश मौलिक ज्ञान संस्कृत में है, जिससे आधुनिक शोधकर्ताओं की पहुंच वहां तक सीमित हो जाती है। संस्कृत के वैज्ञानिक ग्रंथों का सरल क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद और डिजिटल लाइब्रेरी का निर्माण करना।

भारतीय ज्ञान परंपरा के दार्शनिक आधार केवल अतीत की स्मृतियाँ नहीं हैं, बल्कि वे भविष्य के लिए अनिवार्य मार्गदर्शिका हैं। **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** का भारतीय संकल्प ही सतत विकास का वास्तविक लक्ष्य है। यदि हम चुनौतियों को पहचानकर प्राचीन प्रज्ञा का आधुनिक नवाचार के साथ समन्वय कर सकें, तो न केवल भारत बल्कि संपूर्ण विश्व एक संतुलित और स्थायी भविष्य की ओर अग्रसर हो सकेगा। जैसा कि अथर्ववेद का संदेश है— "**ओषधयः संवदन्ते सोमेन सह राज्ञा**" (सभी औषधियाँ और वनस्पतियाँ आपस में संवाद करती हैं), वैसे ही आज प्रकृति और मनुष्य के बीच खोए हुए संवाद को पुनः स्थापित करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

"**भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्यों का वैश्विक योगदान**" विषय पर किए गए इस गहन विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा मात्र एक ऐतिहासिक धरोहर नहीं, बल्कि आधुनिक वैश्विक संकटों का एक जीवंत समाधान है। जहाँ पश्चिमी विकास मॉडल 'बाहरी समृद्धि' और 'उपभोग' पर केंद्रित रहा है,

वहीं भारतीय दर्शन 'आंतरिक संतोष' और 'प्रकृति के साथ तादात्म्य' को वास्तविक प्रगति का मापदंड मानता है। इस शोध के माध्यम से हम निम्नलिखित महत्वपूर्ण निष्कर्षों पर पहुँचते हैं:-

- भारतीय मनीषा ने हज़ारों वर्ष पूर्व यह समझ लिया था कि मनुष्य प्रकृति से पृथक कोई सत्ता नहीं है। यजुर्वेद के शांति पाठ की यह प्रार्थना— **"वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिः"** —केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि एक पारिस्थितिक प्रतिज्ञा है। यह निष्कर्ष निकलता है कि जब तक विकास की अवधारणा में 'चेतन प्रकृति' का समावेश नहीं होगा, तब तक कोई भी लक्ष्य 'सतत' नहीं हो सकता।
- उपनिषदों का **'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा'** का सूत्र आज के 'क्लाइमेट चेंज' के दौर में सबसे बड़ी आवश्यकता है। शोध यह सिद्ध करता है कि संसाधनों का संयमित उपयोग ही भावी पीढ़ियों के अधिकारों की रक्षा करने का एकमात्र मार्ग है।
- भारत द्वारा G20 और अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन जैसे मंचों पर **'वसुधैव कुटुंबकम्'** और 'One Earth, One Family, One Future' के दर्शन को प्रस्तुत करना यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल्य अब वैश्विक नीतियों का मार्गदर्शन करने में सक्षम हैं। यह दर्शन विश्व को 'प्रतिस्पर्धा' के स्थान पर 'सहयोग' की ओर ले जाता है।

अतः हमें एक ऐसे 'हाइब्रिड मॉडल' की आवश्यकता है जहाँ प्राचीन भारतीय जीवन-मूल्य और आधुनिक विज्ञान की तकनीकें एक साथ काम करें। प्राचीन जल प्रबंधन, जैविक कृषि और आयुर्वेद आधारित जीवनशैली को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़कर ही हम SDG लक्ष्यों को समय सीमा के भीतर प्राप्त कर सकते हैं।

मानवता के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमें पुनः उस वैदिक प्रार्थना की ओर लौटना होगा जो समस्त चराचर जगत के कल्याण की कामना करती है:-

"सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्॥"

यह वैश्विक सुख और आरोग्य की कामना ही 'सतत विकास' का अंतिम लक्ष्य है। भारतीय ज्ञान परंपरा इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु न केवल एक दिशा प्रदान करती है, बल्कि एक स्पष्ट नैतिक धरातल भी निर्मित करती है।

संदर्भ सूची

प्राचीन एवं मूल ग्रंथ :

1. **आचार्य, श्री.** (2012). ईशावास्य उपनिषद: विद्या और अविद्या का समन्वय. वाराणसी: चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन।
2. **गोयन्दका, ज.** (2015). श्रीमद्भगवद्गीता (तत्वविवेचनी टीका). गोरखपुर: गीता प्रेस।
3. **पाण्डेय, र.** (2008). अथर्ववेद संहिता (पृथ्वी सूक्त खंड). दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
4. **शर्मा, ओ. पी.** (2010). वृक्षायुर्वेद: प्राचीन भारतीय पादप विज्ञान. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
5. **सिंह, जे.** (2014). ऋग्वेद संहिता (शांति पाठ एवं जल सूक्त). दिल्ली: संस्कृत संस्थान।
6. **शास्त्री, ए.** (2011). तैत्तिरीय उपनिषद: पंचकोश एवं सृष्टि विज्ञान. हरिद्वार: रणधीर प्रकाशन।
7. **मिश्र, के.** (2009). महाभारत (शांति पर्व: राजनीति और धर्म). गोरखपुर: गीता प्रेस।

आधुनिक पुस्तकें एवं शोध सामग्री :

1. **कपूर, एस. सी.** (2021). इंडियन नॉलेज सिस्टम: फिलोसोफिकल फाउंडेशन एंड सस्टेनेबिलिटी. नई दिल्ली: विद्या प्रकाशन।
2. **खन्ना, ए.** (2019). इकोलॉजी एंड एथिक्स इन उपनिषदिक लिटरेचर. ऑक्सफोर्ड: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. **गांधी, एम. के.** (1909). हिंद स्वराज (संपादित संस्करण 2010). अहमदाबाद: नवजीवन ट्रस्ट।
4. **जोशी, एस. डी.** (2022). IKS एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स: ए न्यू पर्सपेक्टिव. इंडियन जर्नल ऑफ फिलॉसफी, 15(2), 45-60।

5. **पंत, के. सी.** (2018). प्राचीन भारतीय जल प्रबंधन पद्धतियाँ. भोपाल: मध्य प्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी।
6. **मिश्रा, एन.** (2023). मिशन LiFE: द विजन ऑफ सस्टेनेबल लाइफस्टाइल. क्लाइमेट पॉलिसी रिव्यू, 8(4), 112-125।
7. **शर्मा, पी. वी.** (2005). चरक संहिता (सूत्रस्थान): स्वास्थ्य एवं आहार विज्ञान. वाराणसी: चौखम्बा ओरिएंटलिया।
8. **वंदना शिवा.** (2016). मेकिंग पीस विद द अर्थ: द इंडियन फिलॉसफी ऑफ इकोलॉजी. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
9. **सिंह, आर. पी.** (2020). वसुधैव कुटुंबकम्: द एथिक्स ऑफ ग्लोबल सिटिजनशिप. दिल्ली: पीयर्सन एजुकेशन।

आधिकारिक रिपोर्ट एवं वेब स्रोत :

1. **भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय.** (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020: भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश. https://www.education.gov.in से प्राप्त।
2. **संयुक्त राष्ट्र (UN).** (2015). ट्रांसफॉर्मिंग आवर वर्ल्ड: द 2030 एजेंडा फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट. न्यूयॉर्क: UN पब्लिशिंग।
3. **IKS डिवीजन, AICTE.** (2023). गाइडलाइन्स फॉर सस्टेनेबिलिटी इन इंडियन नॉलेज सिस्टम्स. https://iksindia.org से प्राप्त।
4. **विश्व बैंक (World Bank).** (2024). क्लाइमेट रेजिलिएंस एंड इंडिजिनस नॉलेज: ए ग्लोबल रिपोर्ट. वॉशिंगटन डीसी।